दादी हृदयपुष्पा जी की विशेषताये

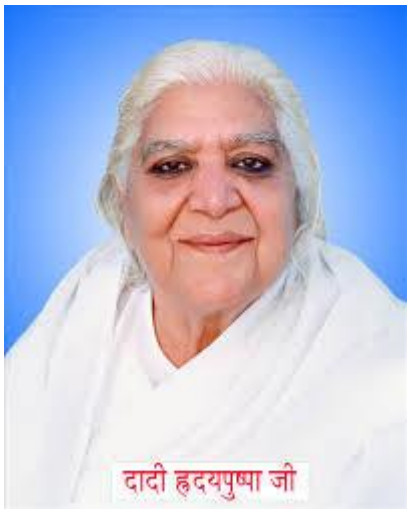

- दादी हृदयपुष्पा जी ज्ञान गंगा बन दक्षिण भारत को पावन बनाया।
- दादी हृदयपुष्पा जी का दृष्टी बहुत दिव्य था। सेकेंड में वतन में जाकर वहाँ पर बाबा से मिलन मानते थे।
- जगदम्बा सरस्वती को बैंगलोर लाने केलिए निमित्त बने। मामा ने जब वहाँ की परिस्थितियों को देखा तो बाबा को वर्णन किया। बाबा ने मम्मा को कहा की अगर बच्ची तक़लीफ़ में है तो उसे ले आना। ये सुन कर दादी ने कहा युद्ध के मैदान से कायर सिपाही भागते हैं, मैं नहीं भागूंगी, बाबा ने भेजा है, मारूंगी, जियूँगी यही। एक बल एक भरोसे पर रहूंगी। मै बाबा के पास गुलदस्ता लेकर ही जाहूँगी। इससे दादीजी का विश्वास समझ सकते है।
- मातेश्वरी जी के साथ आत्माओं को जगाते हुए बेंगलुरु की सेवाओं के लिए फाउंडेशन बने।
- पहला पहला नेहरू नगर सेवा केन्द्र में बाबा के बच्चो की सुन्दर फूलों की बग़ीचे से निकले हुए सुगंधित पुष्प सिर्फ़ भारत में ही नहीं पूरे विश्व में सुगन्ध फैला रहे हैं |
- दादीजी अपनी दिनचर्या पर बहु ध्यान देते थे। अमृतवेला कभी मिस नहीं करते थे। बहुत स्नेह, शक्तिशाली स्मृति सहज रहता था।
- हर कर्म में बाबा के चरित्र का अनुभव कराते थे |
- दादीजी मुरली के मस्तानी थी। समय मिलते ही लिखी हुवी पॉइंट्स का अध्ययन करते थे।
- सोने से पहले कटीये पर बैठे ही बहुत समय याद में रहते थे, फिर बाबा की गोद में सो जाते थे।

- दादीजी सच्ची गोपी बन बाप दादा के साथ अव्यक्त रास का अनुभव करते थे। सच्ची गोपिका का अनुभव करते भी थे और कराते भी थे।
- ब्राह्मण वत्स कोई भी गलती करते थे तो उन को भी प्यार से अपनाकर, उनकी विशेषताओं को सुनाते हुए उनको शिक्षा देते थे।
- बाबा ने जब इस यज्ञ को आगे बढ़ाने का सोचा तब दक्षिण भारत मै भाषा के कारण कोई भी जाने केलिए तैयार नहीं थे तब दादीजी ने हिम्मत से हाथ उठाया। दादी जी के हिम्मत को देखते हुए उनको दक्षिण भारत की सेवाऔ केलिया भेजा गया। ऐसे दादी जी ज्ञान गंगा बन परमपिता परमात्मा को प्रत्यक्ष करने के कार्य में निमित बने।
- परमपिता परमात्मा का यादगार रूप शिवलिंग के आकार में आध्यात्मिक संग्रहालय बनाने के निमित बने। बाबा के संदेश अनुसार 42 फ़ीट का शिवलिंग निर्माण किया गया।
- परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा चारों ओर ज्ञान गंगाऔ को प्रवाहित किया। इसका भी यादगार जो भागीरथ है उसका भी निर्माण करने का भाग्य दादी जी का रहा।
- ब्राह्मणों का पावन पर्व रक्षाबंधन है। दादी जी अपने शक्तिशाली दृष्टि से बाप दादा का अनुभव कराते थे और अपने गोदी में समा लेते थे। ऐसा अनुभव के लिए सभी छत्रक थे।
- दादी जी को देखते ही हर एक अपनापन महसूस करते थे।
- परमात्मा की द्विय लीलाओं को भागवत की तरह ब्राह्मण कुलभूषणो को वर्णन करते थे। समय की सीमा को न देखते हुए सभी सुनने में मग्न हो जाते थे।
- दादी चंद्रमणि जी के साथ मिलकर सभी को माँ बाप की पालना दी।
- ब्रह्म भोजन का महत्व समझाते हुए सभी को प्यार से भोग खिलाते थे।
- सेन्टर पर कोई भी बीमार पड़ते थे तो वे ख़ुद ही उनकी सेवा में उपस्थित होकर माँ की तरह देखभाल करते थे।

- सेन्टर को स्वच्छ रखना, खाना बनाना, हर एक बात स्वयं करके सिखाते थे।
- छोटे बड़े सबके मन को समझते हुए उनकी आवश्यकताऔ को पूर्ण करते थे।
- बहुत प्यार से ईश्वरीय मर्यादाऔ को, श्रीमत को समझाते थे।
- दादी जी हरेक के ऊपर विश्वास रखते हुए उनके विशेषताओं के अनुसार आगे बढ़ाते थे।
- दादी जी को बाबा के प्रति, यज्ञ के प्रति और दादी जी के प्रति बहुत मान था। अंतिम क्षणों में बहुत डिटैच, लाइट अनुभव करते थे। उनको अपनी अंतिम क्षण का महसूस था, तब दादी प्रकाशमणि जी को बैंगलुरू में बुलाया गया। उन्होंने यज्ञ की सारी जिम्मेवारियों को दादी जी के हाथ में रखकर निश्चिंत हो गए। कितने विशाल दिल के थे।
- यज्ञ की हरेक पैसे का वैल्यू रखते हुए अपने सुख के साधनों को भी त्याग करते हुए सब कुछ यज्ञ की सेवा में लगाया। और सभी का भी यज्ञ में सफल कराया।
- दादी जी कबी भी नाम मान शान की इच्छा नहीं रखा लेकिन सभी को मान देते रहे ।

***** ॐ शांति *****